**विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय**

**रूपम कुमारी , वर्ग-दशम्  विषय-हिन्दी 🌷**

**दिनांक- 30/5/20**

## || अध्ययन-सामग्री ||

**जीवन-धारा ..... गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है –"संसार में समस्या और समाधान दोनों ही साथ उत्पन्न होते हैं" ।**

सच में ,कोई भी समस्या ऐसी नहीं है जिसका सहचर समाधान नहीं है।

उपरोक्त उक्ति वर्तमान समय में भी संदर्भित है संक्रमण का यह काल भीषण तो जरूर है लेकिन कोई ना कोई स्थाई समाधान भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ है ।जब तक समाधान नहीं मिलता तरह तरह की चुनौतियों का सामना करते हुए हमें बचाव के नियमों का पालन करते हुए जीना होगा ।

तो हम घबराएं नहीं-,सतर्क रहें, सुरक्षित रहें !

शुभ आकांक्षी

आपका विद्यालय परिवार

रोचक तथ्य : 29 मई 1953 को तेनजिंग

शेरपा और एडमंड हिलेरी ने इस दिन सुबह 11:30 में दुनिया के सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट पर अपने कदम रखे थे ।

वार्तालाप: बच्चों पिछली कक्षा तक हमने कृतिका के प्रथम पाठ को पढ़ा । पूर्ण विश्वास है कि आपने सारे प्रश्नों को हल कर लिया होगा ।आज हम फिर व्याकरण की ओर रुख करते हुए वाच्य को जानने का प्रयास करेंगे .....

## वाच्य

परिभाषा : वाच्य का अर्थ है- बोलने का विषय क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं ।

साधारण शब्दों में क्रिया अपने रूप यानी लिंग ,वचन का निर्धारण कर्ता के अनुसार करती है, कर्म के अनुसार करती है या भाव के अनुसार ।बस ,क्रिया के इस रूप निर्धारण को ही वाच्य कहते हैं । रूप निर्धारण के द्वारा क्रिया ही वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव की प्रधानता को निर्धारित करती हैं।

नोट: -क्रिया का रूप निर्धारण ही उसके बोलने का विषय कहलाती है ।

कुल मिला कर कहेंगे कि -क्रिया ही अपने रूप के द्वारा तय करती है कि वाक्य का मुखिया कौन है ।

जैसे–

- सोहन दौड़ रहा है ।
- मीरा कपड़े धो रही है ।

- उपरोक्त के प्रथम वाक्य में दौड़ना क्रिया ने अपना लिंग और वचन सोहन कर्ता के अनुसार अपना रूप (एकवचन ,पुं ) निर्धारित किया है । अत: वाक्य में सोहन(कर्ता) प्रधान है तो नियमानुसार यह कर्तृवाच्य होगा ।

उसी प्रकार, दूसरे वाक्य में भी -क्रिया ने मीरा(जो कि कर्ता है)के अनुसार अपना रूप स्त्रीलिंग, एकवचन निर्धारित कर मीरा को प्रधानता दी है ।यानी -क्रिया के बोलने का विषय मीरा यानी कर्ता है ।अतः कर्तृवाच्य होगा ।

## वाच्य के भेद:

- कर्तृवाच्य

अकर्तृवाच्य : इसमें क्रिया के बोलने का विषय है यानी उसके रूप निर्धारण का विषय कर्ता होता है। कर्तृवाच्य में क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में हो सकती हैं _

जैसे -

मोहन सड़क पर दौड़ता है ।यहां दौड़ना क्रिया अकर्मक है लेकिन दूसरे वाक्य में-

मोहन पुस्तक पढ़ता है - इस वाक्य में पढ़ना क्रिया मूलत: सकर्मक भी है और यहां कर्म पुस्तक भी मौजूद है । इस प्रकार हमने देखा कि कर्तृवाच्य में मोहन (कर्ता) के अनुसार ही -क्रिया ने भी खुद को पुल्लिंग और एक वचन रखा है क्रिया के बोलने का विषय मोहन अर्थात कर्ता है ।

*नोट अकर्मक और सकर्मक क्रिया को समझने में अगर असमंजस है तो वर्ग अष्टम के व्याकरण को खोलें और क्रिया को पढ़ें ।।*

*अब हम अकर्तृवाच्य को कल जानेंगे तथा कर्तृवाच्य शेष उदाहरण को भी पढ़ेंगे ।*

*धन्यवाद !*